सोसाइटी को समझना

श्री राम कॉलेज में वित्त, मार्केटिंग, डीबेटिंग, सामाजिक सुधार, ललित कला, मानव-संसाधन आदि क्षेत्रों में लगभग 50 कार्यरत सोसायटी हैं। ये कैंपस में शिक्षा कार्यों के अतिरिक्त गतिविधियों के लिए एकमात्र स्थान हैं। कई पूर्व छात्रों की लंबे समय तक रहने वाली दोस्ती इन्हीं सोसायटी के द्वारा स्थापित होती हैं। यह अतिरिक्त पाठयक्रम के अकेले स्थान हैं। हालाँकि, क्या सोसायटी एक स्थान के रूप में सभी के लिए समान रूप से सुलभ हैं? आइए, यह देखने के लिए हम एक के बाद एक इन विशिष्ट सोसायटी के कामकाजों का मूल्यांकन करते हैं।

<u>चयन प्रकिया-</u>

प्रथम सत्र के पहले दिन से ही हमें विभिन्न सोसाइटी के बारे में बहुत सारी जानकारियों से अवगत कराया जाता है। नए छात्रों का सोसाइटी में शामिल होने का निर्णय ज्यादातर झुकाव, वरिष्ठ छात्रों की सिफारिशों और कभी-कभी स्वंय की रूचि से प्रभावित होते हैं। ओरिएंटेशन कॉलेज प्रवेश करते ही शुरु हो जाता है और नए छात्रों को अपने वरिष्ठ छात्रों से विभिन्न सोसायटी की वास्ताविकता के बारे में चर्चा करने का भी समय नहीं मिलता है। यह उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है, जिससे सोसायटी का छात्रों पर जरूरत से ज्यादा बोझ पड़ने लगता है और इसके कारण गुणवत्ता-रहित कार्यों ओर सीखने के अवसर पर बुरा असर पड़ता है, इस पर यहाँ बाद में चर्चा की जाएगी।

सोसायटी में आमतौर पर एक चयन प्रक्रिया होती है जिसमें लगभग तीन चरण होते हैं – आवेदन, समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार। यद्यपि, आवेदन प्रक्रिया महज एक औपचारिकता-भर होती है परन्तु अन्य दो प्रक्रियाएँ छात्रों के पारस्परिक कौशल, योग्यता, सामान्य जागरूकता और व्यावसायिक ज्ञान का परीक्षण करने के लिए हैं। वे छात्र जो उच्च स्तरीय विद्यालयों से आते हैं इन प्रक्रियाओं में अच्छा करते हैं। परंतु, यह उन छात्रों को जो सामान्य पृष्ठभूमि से आते हैं, एक बड़ी ही प्रतिकूल परिस्थिति में डाल देता है, क्योंकि इन प्रक्रियाओं में आत्म-मूल्यांकन, आत्मविश्वास और अंग्रेजी दक्षता की आवश्यकता होती है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि इन सभी मूल्यांकनों के दौरान आत्मविश्वास वह सबसे विशिष्ठ गुण है जो कि साथियों और समाज की स्वीकृति से आता है। हालाँकि, हमारे समाज में जाति और वर्ग जैसी सामाजिक-आर्थिक श्रेणियाँ इस चीज को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं। जिस समाज में हम रहते हैं, वह कुछ लोगों के लिए आत्मविश्वास हासिल करना सुलभ व अन्य के लिए लगभग नामुमकिन बना देता है क्योंकि "वे कुछ" एक विशिष्ठ समाज से आते है।

यह स्वरूप हमारे कॉलेज की सोसाइटी में आसानी से देखा जा सकता है। कुछ दस सोसायटी के फेसबुक हैंडल को खोलने पर, कुछ ही छात्र हैं, जिनके नाम सभी सूचियों में दिखाई देते हैं। हम सबने यह अनुभव किया है कि कई सोसाइटी के लिए पूरी चयन के दौरान जिन पहलुओं का आकलन किया जाता है, वे छात्रों में कुछ जन्म-जात प्रतिभा या क्षमता के कारण नहीं, बल्कि स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच और अवसरों के विभेद के कारण भिन्न होते हैं। अपनी इच्छा की सोसाइटी में चयनित नहीं होना- उन्हें अयोग्य महसूस कराता है और यह उनके आत्मविश्वास और भविष्य में कॉलेज की गतिविधियों में उनकी भागीदारी पर एक गंभीर प्रभाव डाल सकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्य कॉलेजों मैं बेहतर चयन प्रक्रिया ओपन सोसायटी के रूप में अपनाई जा रही हैं। ओपन सोसाइटी सभी इच्छुक छात्रों को इन अनावश्यक और त्रुटिपूर्ण चयनित प्रक्रिया से दूर रहते हुए, उन्हें सोसायटी में शामिल होने की अनुमति देते हैं। प्रत्येक छात्र को सीखने और उसकी क्षमता के अनुसार योगदान करने का मौका दिया जाना चाहिए और उनकी प्रतिभा को उनके कॉरपोरेट संबंधों व उनके खुद को बेच पाने की काबिलियत से नहीं बल्कि उनकी कार्य कुशलता के आधार पर मापा जाना चाहिए। इस नीति को कम से कम तीन महीने की अवधि के लिए अपनाया जा सकता है और स्थायी सदस्यों को उनके प्रदर्शन के आधार पर इस अवधि के बाद चुना जा सकता है।

<u>उपाविभाग एवं पद आवंटन:</u>

एक बार सोसाइटी में शामिल होने के बाद, हम सभी पहले से प्राप्त कौशल और साक्षात्कार में प्रदर्शन के आधार पर विभिन्न विंगों में बँट जाते हैं। एक सोसाइटी के सभी उप-विभागों के साथ समान व्यवहार नहीं किया जाता है। सोसाइटी के विभिन्न उप-विभागों के भीतर एक अनियोजित पदानुक्रम कार्य करता है, सोसाइटी की संरचना के अनुसार अधिकांश कार्य आयोजन, तकनीकी व मार्केटिंग उप-विभागों के द्वारा किया जाता है, जिन्हें उचित महत्व प्राप्त नहीं होता है। शोध, संपादकीय और प्रायोजक उप-विभाग मुख्य रुप से वैधानिक और आंतरिक कामकाज में शामिल होते हैं- वे अधिकतम योग्यता प्राप्त करते हैं जबकि इस योग्यता का वादा पूरी सोसायटी से किया गया था। यह प्रक्रिया छात्रों के अनिवार्य रोटेशन (न केवल सिद्धांत बल्कि व्यवहार के रूप में भी) और छात्रों का उनके पूर्व-अनुभव के बजाय उनके प्रदर्शन के आधार पर मूल्याकंल के द्वारा पूर्ण रुप से बदली जा सकती है।

अधिकांश संभ्रांत छात्र दोबारा विशेष पृष्ठभूमि के द्वारा प्राप्त अपने निजी कॉरपोरेट संबंधों की वजह से वैधानिक और प्रायोजक विंग का हिस्सा बन जाते है। उप-विभागों का आवंटन भी क्षेत्रीय पक्षपात की भेंट चढ़ जाता है।

उदाहरण के रुप में: ज्यादातर दक्षिण भारतीय छात्रों को आयोजन उप-विभाग में शामिल किया जाता है। पंजीकृत और अपंजीकृत दोनों ही सोसायटी रुढिबद्ध हैं, और ये यह मान लेते हैं कि दक्षिण भारतीय छात्र मुख्यतः क्षेत्र संचालन और आयोजन से संबंधित कार्य करेगें। यघपि, सोसाइटी व फेस्ट का लॅजिस्टिक भाग अत्यधिक महत्व का है, लेकिन ज्यादातर लोग इसको कम महत्वपूर्ण मानते हैं और यह स्वरूप वर्षों से नहीं बदला है। यह भी सच है कि साधारण वर्गों से आने वाले दक्षिण भारतीय छात्रों को उच्च वर्ग के छात्रों की तुलना में अधिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। यह फिर से अंतर का कारण बन जाता है जब कैबिनेट पद की नियुक्तियों के दौरान संभ्रांत छात्रों को अधिक अनुकूल परिस्थिति में पाया जाता है।

दक्षिण भारतीयों के खिलाफ पूर्वाग्रहों का प्रतिकार दक्षिण भारतीय प्रभुत्व वाली सोसायटी द्वारा किया जाता है, जहाँ दक्षिण भारतीय छात्रों को प्राथमिकता सदस्यता और कैबिनैट पद दिये जाते है। दोनों ही मामलों में, छेत्रवाद की बाधाओं के बिना एक साथ काम करना हासिल नहीं हो पाता है। लगभग सभी सोसायटी, नए छात्रों को शामिल करना और कैबिनेट पदों का आवंटन दोनों ही कुछ हद तक वरिष्ठ छात्रों से प्रभावित होते हैं, जो अपने क्षेत्र या स्कूल (ज्यादातर मामलों में) से आए हुए कनिष्ठ छात्रों का पक्ष लेते हैं। विशेष रुप से पंजीकृत सोसाइटी के मामले में, अधिकांश पद चुनावों के दौरान वरिष्ठ छात्रों के योगदान के आधार पर भरे जाते हैं। चूंकि, अधिकांश दक्षिण भारतीय छात्र संघ के साथ बहुत सक्रिय हैं और अपनी चुनावी प्राथामिकताओं के बारे में मुखर हैं, इसलिए वे अपने वरिष्ठ छात्रों की मदद से पदों को सुनिश्चित करते हैं और पद आवंटन की यह विकृत प्रक्रिया उन छात्रों के लिए नुकसानदेह है जो अपने आप को चुनावों से अलग रखते हैं।

इसके अलावा, सोसायटी के अंदर अधिकांश संवाद हिंदी में होते हैं, यह जानते हुए भी कि कॉलेज में पूरे भारत के साथ-साथ अंतराष्ट्रीय छात्र भी आते हैं। भाषा की अंज्ञानता (चाहे हिंदी हो या अंग्रेजी) भी नए छात्रों को शामिल करने में हिचकिचाहट का कारण बनती है और यह दक्षिण भारतीय, उत्तर-पूर्वी और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को बड़े पैमाने पर एक प्रतिकूल परिस्थिति में डाल देती है।

<u>अंतर-सोसायटी पदानुक्रम-</u>

अंतर-सामाजिक स्तर पर ऐसे पदानुक्रम बनाए जाते हैं जो संभ्रांतों में से गैर-संभ्रांतों वर्ग से अलग करते हैं। जैसे कि, डीबेटिंग सोसाइटी बनाम युवा सांसद। इनैक्टस बनाम कनैक्टिंग ड्रीम्स फ़ाउंडेशन, यूथ कॉन्फ्रेंस बनाम क्लिफ। यघपि, ये सोसायटी समान स्तर पर कार्य करती हैं, लेकिन कॉलेज में पारंपरिक धारणा के अनुसार बाद वाले को हमेशा पहले वाले की तुलना में कम माना जाता है। यह, इस वजह से है कि इन बाद वाली की सोसायटी ने गैर-संभ्रांत लोगों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। यहाँ, हम फिर से अनजाने में, व्यवस्थित रुप से विशेषाधिकार की स्थिति को बहाल कर रहे हैं।

<u>सभी स्तरो पर भेदभाव और पदानुक्रम:</u>

ऊपर की चर्चा से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारी सोसाइटी अंदर से और बाहर से पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों पर बनी हुई हैं। हम उस समय से कॉलेज के सामाजिक ताने-बाने के भीतर अन्यायपूर्ण रैंकिंग बनाते हैं जब से कुछ छात्र सोसायटी में प्रवेश कर लेते हैं और कुछ इसमें असमर्थ होते हैं। हम बाद वालों को 'कम होशियार' या 'ढंग से न पढ़े' होने का ठप्पा लगा देते हैं कि वे सोसाइटी का हिस्सा होने के लायक नहीं है, जबकि हम इसके वास्तविक कारणों से अंजान रहते हैं, यहाँ तक कि एक बार सोसाइटी में चयनित होने के बाद हम छात्रों को आदी होने के लिए मजबूर करते हैं कि वे उस समाज की संस्कृति का अनुसरण करें। अगर इसका पालन नहीं किया जाता है तो फिर इस प्रकार के छात्रों को अलग रहने पर मजबूर कर दिया जाता है। यहाँ तक कि अगर साधारण वर्ग प्रारंभिक चयन बाधाओं को पार करते हैं, तब विभिन्न विभागों के रुप में सोसायटी के भीतर पदानुक्रमित संघर्ष फिर से भेदभाव को संरचनात्मक रुप से प्रभावित करता है। इसलिए, यदि कोई गैर-संभ्रांत हमारे कॉलेज के शीर्ष सोसायटी का हिस्सा बनने की कोशिश करता है (जो कि ज्यादातर मामलों में एक संभ्रांत वर्ग का वर्चस्व है) तो इसे सबसे पहले किसी भी सोसाइटी में शामिल होने में ही कठिनाई का सामना करना पड़ता है। फिर उस सोसाइटी के शीर्ष पर बने रहने पर कठिनाई आती है और फिर उस सोसाइटी के महत्तवपूर्ण विभाग का हिस्सा बनने में कठिनाई होती है और अंत में खुद को उस उच्च स्तरीय सोसायटी के संभ्रात वातावरण का हिस्सा बनाए रखने में कठिनाई होती है। क्योंकि, कॉलेज में हर कोई सोसाइटी की पूजा करता है, जो लोग इसमें प्रवेश पाने मैं असमर्थ हैं या प्रवेश पाकर इसे किसी कारण से छोड़ देते हैं, कॉलेज से खुद को विस्थापित महसूस करते हैं। यह उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है।

<u>क्या हम सोसाइटीयों को अधिक जवाब देह बना सकते हैं?</u>

सभी सोसाइटी आमतौर पर उत्सव उन्मुख होते हैं और सोसाइटी के सामान्य कार्यों की उपेक्षा करते हैं। पंजीकृत सोसाइटी वर्षों से भव्य उत्सवों की मेजबानी की विरासत को आगे बढ़ाती आई हैं और इसलिए उनका अधिकांश समय और संसाधन तीन दिन के बड़े उत्सव में व्यर्थ हो जाता है। इस प्रकार के उत्सव को आयोजित करने में जनशक्ति, वित्त, सामग्री तथा मार्केटिंग, मंचन, फ्लैक्स और बैनर, ऊर्जा आदि भारी मात्रा में लगते हैं। कल्पना कीजिए कि 50 सोसायटी की 50 गुणा कचरे की जो मात्रा उत्पन्न होती है उससे पूर्ण रुप से बचाव किया जा सकता है, हम इस भारी मात्रा में उत्पन्न कचरे हम

इस भारी मात्रा में उत्पन्न कचरे को एक शानदार सांस्कृतिक/व्यावसायिक उत्सव का आयोजन करके रोक सकते हैं। हमारी सोसायटी में होने वाली अक्षमताओं के बारे में एक विस्तृत लेख भविष्य के लेखों में प्रस्तुत की जाएगी।